बूंदी आढ़तिया संघ के दिवाली मिलन समारोह में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आप सभी को दिवाली का राम राम। दिवाली आप सभी के जीवन में समृद्धि लाए, खुशहाली लाए, प्रगति लाए और आप सभी के प्रयासों से समाज के सभी लोगों के जीवन में खुशहाली आए, मैं इसके लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं।

मैं बूंदी आढ़तिया संघ को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। आज इस मंडी प्रांगण के अंदर दिवाली स्नेह मिलन के माध्यम से आढ़तियों - व्यापारियों और विशेष रूप से हमारे अन्नदाता, जिनके अथक प्रयासों से, जिनकी कड़ी मेहनत से, जिनके पसीने से, आज कोटा और बूंदी का नाम पूरे देश के अंदर है, सबका अभिनंदन करता हूँ।

मुझे खुशी होती है, जब मैं देश के बाहर जाता हूं और देश के बाहर भी उन देशों के अंदर जो एग्रीकल्चर में सबसे प्रोग्रेसिव देश हैं, विकसित देश हैं, उन देशों में भी बूंदी के बासमती चावल की महक है। मैं उस बूंदी का प्रतिनिधि हूं।

मैं कुछ दिन पहले नीदरलैंड गया था, नीदरलैंड जिसे हॉलैंड भी कहते हैं, कृषि में बहुत प्रोग्रेसिव देश है। कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन करता है, दुनिया में सबसे आधुनिक खेती करने के लिए उसकी अपनी पहचान है।

जब शाम को वहां के एम्बेसेडर ने रात्रि भोज दिया तो उसमें मुझे चावल के कई व्यापारी मिले। उन्होंने आग्रह किया कि कुछ टेक्नीकल कमी के कारण आपके बूंदी के बासमती चावल यहां नहीं भेज पा रहे। हमारे इलाके के अंदर, इस देश के अंदर, देश के अलावा अन्य यूरोपियन देशों के अंदर बूंदी के बासमती चावलों की बहुत डिमांड है। कुछ दिन पहले मुझे ईरान के माननीय स्पीकर मिले थे, ईरान के माननीय स्पीकर ने भी यही कहा, कुछ प्रतिबंध का हवाला दिया, कुछ आपस में द्विपक्षीय संबंधों का हवाला दिया और आग्रह किया क्योंकि बूंदी के चावल, बासमती की विशेष रूप बहुत बड़ी मांग है।

दुबई में भी इसी तरह की मांग है। उस दिन मुझे बहुत गर्व हुआ, बूंदी के किसानों के प्रति, जिन्होंने अपनी मेहनत से, अपनी कार्य कुशलता से कम संसाधन होने के बाद भी बूंदी के चावल की क्वालिटी को मैन्टेन करने का काम किया और उसकी खुशबू की महक दुनिया तक पहुंचाने का काम किया।

अभी हरिमोहन जी और अन्य बता रहे थे कि कोटा-बूंदी एयरपोर्ट रहना चाहिए। आप दुनिया के अधिकतम देशों में जाएं। मैं तीन देशों में गया और तीन देशों के अंदर मैंने देखा, इटली में अगर कोई पहचान है तो बूंदी की है। मैं जितने देशों में गया, अगर राजस्थान की कोई पहचान है तो एक पहचान महाराणा मेवाड़ की नजर आई और दूसरी पहचान बूंदी की नजर आई। बूंदी की पहचान के महारत्न दुनिया के अंदर हैं। मैं तो कोटा-बूंदी का सांसद हूं, मैं जरूर कोटा में पैदा हुआ। मेरे पिताजी बूंदी के गांव में पैदा हुए थे। जब कोई पूछता है कि आपका गांव कौन सा है, तो गांव तो हमेशा मेरा बूंदी का ठीकरिया ही रहेगा। यह बूंदी की पहचान है।

बूंदी की पहचान केवल बासमती चावल से नहीं है, बूंदी की पहचान यहां के चावल, चावल मिल, भिंडी, मटर और जितनी भी सब्जियां हैं, विशेष रूप से नई तकनीकी खेती बूंदी के आसपास के इलाकों के अंदर अमरूद की होने लगी है, से है। मुझे लगता है कि बूंदी में एक दिशा हमारी यह भी बन रही है कि किस तरीके से बूंदी को हम एग्रीकल्चर प्रोडक्शन का एक बड़ा हब बना दें। प्रोडक्शन हब बनाने के लिए एक नई तरह की तकनीकी आधुनिक खेती करने की आवश्यकता है।

हम प्रॉपर खेती के अंदर किस तरह से नई तकनीकी का उपयोग कर सकते हैं। दुनिया में नई रिसर्च हो रही हैं, इनोवेशन हो रहे हैं, उनका कैसे यहां उपयोग कर सकते हैं और कम जमीन में ज्यादा उत्पादन और उत्पादन के साथ प्रॉसेस करके वैल्यु एडीशन बढ़ाकर देश और दुनिया में बेचने का काम करें।

अभी कुछ किसान दिल्ली गए थे। किसान मेले में अगले दिन मैं भी पूसा गया, मैं देखने गया क्योंकि वहां देश के बढ़िया स्टार्टअप में युवा वैज्ञानिकों ने एग्रीकल्चर में नई रिसर्च की है, इनोवेशन किए हैं, वहां उसकी प्रदर्शनी लगाई गई थी।

मुझे माननीय मंत्री जी का आग्रह आया कि आप आएंगे तो उचित रहेगा। मेरी तो खुद जाने की इच्छा थी। मैं वहां गया, मैंने देखा कि किस तरीके से देश के युवा वैज्ञानिकों ने एग्रीकल्चर में नई रिसर्च की हैं कि कैसे

हम आधुनिकता में हमारे पुराने प्रॉसेस में किस तरह से कम फर्टीलाइजर्स में कम उत्पादन कर सकते हैं। फर्टीलाइजर होना चाहिए तो जैविक रूप से फर्टीलाइजर।

मैं देश और दुनिया में जाकर एग्रीकल्चर देखता हूं। मैं जब भी किसी देश में जाता हूं, जैसे मैं मैक्सिको गया तो वहां यूनिवर्सिटी में गया, नीदरलैंड गया तो वहां की एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में गया।

मेरे जाने का एक ही मकसद रहता है कि वहां जो भी नई रिसर्च हो रही हैं, यहां की प्रकृति, यहां के वातावरण, यहां की मिट्टी, यहां के पानी की अनुकूलता को देखते हुए कैसे हम किसान की आमदनी बढ़ा सकते हैं। जनवरी में देश के बढ़िया एग्रीकल्चर में काम करने वाले स्टार्टअप का मेला लगाएंगे। हम प्रगतिशील किसानों से आग्रह करेंगे, उसमें कुछ चीजें जो संभव हो सकती हैं, उसे कुछ किसान कुछ इलाकों में करके देखें। अगर उनके परिणाम अच्छे आते हैं तो और किसानों को प्रेरणा मिलेगी। अगर और अच्छे परिणाम आएंगे तो और किसानों को प्रेरणा मिलेगी।

हम एग्रीकल्चर का बैस्ट प्रोडक्शन हब और उसके साथ प्रोसेसिंग यूनिट लगाने से बूंदी को हब बना सकते हैं। इसकी बहुत बड़ी संभावना मेरे मन में है। मुझे लगता है कि जो सपने देखता है, जो आकांक्षाएं पालता है, उसे पूरा करने का प्रयास भी करता है।

आपने मुझे जिम्मेदारी दी है तो मेरी और जिम्मेदारी बन जाती है कि जो दायित्व मुझे मिला है, उसके जितने भी संपर्क हैं, उन संपर्कों का लाभ बूंदी को मिले, कोटा को मिले ताकि हम यहां के किसानों को प्रगतिशील बना सकें, खुशहाल बना सकें। परंपरागत खेती में भी नई आधुनिक खेती में जब तक देश में किसान आर्थिक रूप से मजबूत नहीं होगा तब तक देश प्रगति नहीं कर सकता है।

हमने कोरोना महामारी के समय हमने देखा कि किस तरीके से देश में एग्रीकल्चर सैक्टर ने ही भारत की आर्थिक स्थिति को बनाकर रखा। शहर में कोई बच्चा काम करता था, नौजवान काम करता था, 15,000, 20,000 या 25,000 रुपये में, उसे दो साल तक वहां नौकरी नहीं मिली तो गांव में जाकर दो टाइम के खाने का इंतजाम हो गया। हमारा एग्रीकल्चर सैक्टर हमारी आर्थिक तंत्र की धुरी है।

मुझे खुशी है कि बहुत चावल मिल यहां लगी हैं, कुछ सब्जियों के प्रोसेसिंग प्लांट्स भी लगे हैं और जो भी संभावनाएं बन सकती हैं, देश के जितने भी इंडस्ट्री सैक्टर और एग्रीकल्चर में काम करने वाली कंपनियों से मेरा लगातार आग्रह रहता है कि आप बूंदी में जाएं। बूंदी में चावल, सब्जियां, आने वाले समय में फल आदि के लिए बहुत बड़ी संभावनाओं का क्षेत्र है। मुझे लगता है कि एक दिन इसके बेहतर परिणाम आएंगे।

मैं आज मंडी में आ रहा था तो मुझे कुछ किसान मिले और किसानों ने बताया कि हम पांच-सात घंटे से ट्रैक्टर लेकर खड़े हैं। जब कोई किसान खड़ा रहता और रात तक इंतजार करता है तो मुझे बड़ा दुःख होता है। मैंने अभी सैक्रेट्री साहब को बुलाया कि मंडी का पूरा नए सिरे से प्लान तैयार करो। जहां यार्ड बनते हैं, उनके प्रस्ताव बनाकर भेजो ताकि हम मंडी के नए यार्ड बना सकें। कुछ बंद यार्ड, कुछ खुले यार्ड और मंडी का जितना बड़ा इलाका है, उस इलाके में रोड लाइट के प्रस्ताव बनाकर भेजें।

रास्ते में लोगों के पीने के पानी की व्यवस्था करें। मंडी नहीं कर पाएगी तो जन सहयोग से सीएसआर से मैं कराऊंगा, लेकिन किसानों को आधारभूत ढांचे की सुविधाएं मिलनी चाहिए।

किसानों के लिए रात्रि में रुकने के लिए विश्राम स्थल होना चाहिए। उसके भोजन और पानी का व्यापक इंतजाम होना चाहिए। माल की तुलाई और माल का ऑक्शन पारदर्शिता से होता है। मैं कोटा मंडी भी गया था। मुझे खुशी है कि हमारे व्यापारियों के प्रति किसान और व्यापारियों का बहुत भरोसा है। यह भरोसा कायम भी रहना चाहिए।

मंडी के अंदर किसान अपनी उपज लाते हैं, आड़तियों और व्यापारियों के भरोसे छोड़ देते हैं। आड़ती और व्यापारी भी ईमानदारी से काम कर रहे हैं।

ये संबंध और मजबूत होने चाहिए। माल का किस तरीके से माल का ज्यादा से ज्यादा पैसा दिला सकें, इसका प्रयास हमेशा व्यापारियों को करना चाहिए।

मुझे लगता है कि समय लगेगा। आप निश्चित मानो, कुछ समय लग सकता है, लेकिन आने वाले समय में मैंने जो समस्याएं देखी हैं, उन समस्याओं का समाधान निश्चित होगा। यहां विधायक जी बैठे हैं, पूर्व विधायक जी भी बैठे हैं, मैं दोनों से आग्रह करता हूं कि लगातार जिस स्तर प्रयास कर रहे हैं, करते रहें और जहां मेरी आवश्यकता

होगी, मैं निश्चित रूप से बात करूंगा। हम इस मंडी को बेहतरीन एग्रीकल्चर हब बना पाएं, यह हमारा प्रयास होना चाहिए।

बूंदी के व्यापारियों ने विशेष रूप से यहां की सड़कों के बारे में मुझे कुछ बातें कही थीं। मैंने चेयरमैन से आग्रह किया था और मैंने आज भी बात की है। मुझे लगता है कि चेयरमैन साहब हरिमोहन जी ने कहा है कि हुडको से सहमति दे देंगे। आप सहमति दे देंगे तो हुडको से लोन लेकर हम बूंदी की सड़कों को ठीक करा देंगे। महिलाएं जाती हैं तो पकड़ लेती हैं कि ये सड़कें टूट रही हैं, कब ठीक होंगी? तब मेरे मन में पीड़ा बहुत होती है।

आप जो प्रस्ताव भेजेंगे, राज्य में भी मैं बात करूंगा। सरकार किसी भी दल की हो, केंद्र में हो या राज्य में हो, लेकिन हमारे लिए पहले इस इलाके की जनता है। दलों की राजनीति से विकास नहीं हो सकता है, उसके चश्मे से देखा भी नहीं जाना है। मैं कोई श्रेय लेना भी नहीं चाहता, यह सबके सामूहिक प्रयासों से संभव हो पाता है, चाहे कोटा-बूंदी का एयरपोर्ट हो।

एयरपोर्ट के बारे में भी लोग समय-समय पर सवाल पूछते रहते हैं। राज्य के मुख्यमंत्री जी से मैंने आग्रह किया था, उन्होंने भी सहमति दी है। मैंने सबसे पहले माननीय प्रधानमंत्री से बात की, माननीय प्रधान मंत्री जी ने सहमति दी तब मैंने राज्य के मुख्यमंत्री जी से बात की। फोरेस्ट का प्रोसेस आप जानते हैं, जयपुर से खटकड की सड़क के लिए अगर इतनी गंभीरता से प्रयास नहीं हो तो फ्लाईओवर बना दें। फ्लाईओवर का बजट 140 करोड़ रुपये है। 140 करोड़ रुपये राज्य सरकार इतने से रोड के लिए कहां से लाएगी? फोरेस्ट के काम के लिए दलेरपुरा का हरिमोहन जी ने जिक्र किया, फोरेस्ट के कारण बूंदी के कई काम अटके हुए हैं। एक-एक काम को हम, जैसे ही राज्य से निकलता है, प्रोसेस करके दिल्ली जाता है, मैं दिल्ली में कोई काम कभी अटकने नहीं देता।

जब दिल्ली में मेरे कब्जे में कोई काम आ जाता है तो डेली मॉनिटरिंग करके हम काम को स्वीकृत कराने का प्रयास करते हैं। मुझे लगता है कि बूंदी की सड़कों के मामले में हम इस तरीके से प्रयास करेंगे।

हरिमोहन जी ने खेल मैदान के लिए कहा है। खेल मैदान का टेंडर हो चुका है, वर्क ऑर्डर भी जारी हो चुका है। एजेंसी से कहा है कि जल्दी काम शुरू करें ताकि खेल मैदान तैयार हो जाए।

इसी तरीके से कुछ फसाड लाइट का विषय था, यह विषय भी क्लियर हो गया है। नगर परिषद् सहमति दे देगी तो लाइट का खर्चा तो आपको देना पड़ेगा, लेकिन रात को जब लोग बूंदी देखेंगे तो पर्यटकों को आकर्षण का केंद्र लगेगा।

मैं तो चाहता हूं कि कोटा का आदमी बूंदी में आकर किले-बावड़ियां देखे। ऐसा हम इस शहर को सुंदर बनाना चाहते हैं। यहां की सुंदरता, यहां के किले, यहां की बावड़ियां पर्यटन के स्तर की हैं।

रामगढ़ गेम सेंक्चुअरी की भी प्रगति चल रही है। आप निश्चित मानो कि बूंदी के विकास में कोई कमी नहीं छोड़ी जाएगी। जिस स्तर पर प्रयास हो सकते हैं, उस स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

बूंदी की एक अपनी पहचान है, बूंदी शौर्य की धरती है, पराक्रम की धरती है, पुरातत्व संस्कृति की धरती है, इसलिए बूंदी के विकास में किसी तरह की कमी न रहे, आप निश्चित मानिए, आपका प्यार, आपका स्नेह और आपका आशीर्वाद हमेशा है। जो कुछ भी आपके मन में विचार, बातें और सुझाव आते हैं, मैं सारे विचारों और सुझावों को पूरा करने का प्रयास करता हूं।

जहां तक मेरी क्षमता है, मैं उस पूरी क्षमता से काम करने की कोशिश करता हूं। मुझे आने में कुछ देरी हो जाती है, क्योंकि मुझे लोक सभा अध्यक्ष के नाते जिम्मेदारी दी है, लेकिन जब भी मैं फ्री होता हूं, यहां आने का प्रयास करता हूं और यहां के लागों की बात सुनता हूं। यहां कुछ मानदाता का विषय भी है, हरिमोहन जी ने भी विषय उठाया है।

इस विषय में मैंने जिला कलक्टर को कहा है कि इस प्रोसेस को जल्दी शुरू करें। यहां के लोगों की जो भावनाएं हैं, उन भावनाओं को पूरा करने का काम हमें जल्दी से जल्दी करना चाहिए। मुझे लगता है कि सरकार भी इस स्तर पर गंभीरता से प्रयास करेगी।

बूंदी के अंदर इसी तरीके से जो चीजें अभी प्रोसेस मे हैं। हरिमोहन जी के मित्र धारीवाल जी हैं, मैं भी उनसे बात करता रहता हूं। उनका 135 करोड़ का वादा है, उसे प्रोसेस में डालें ताकि काम जल्दी पूरा हो। 135 करोड़ रुपये अगर बूंदी में लग जाएंगे तो मुझे लगता है कि बूंदी का सुनहरा परिवर्तन हो जाएगा। मैंने भी उनको आग्रह किया है कि बूंदी आपका ही है, बूंदी में किस तरीके से पैसा आ सके, इसकी चिंता करें।

नगर परिषद् की एक लिमिटेड आय होती है, नगर परिषद् की बहुत ज्यादा इनकम नहीं होती है। नगर विकास न्यास हुडा में तो जमीन बहुत होती है, इसलिए पैसा बहुत होता है, इसलिए रेवेन्यु मॉडल जो है, उस रेवेन्यु मॉडल में सरकार की मदद की आवश्यकता पड़ेगी। जहां केंद्र सरकार की आवश्यकता होगी, निश्चित रूप से सरकार की तरफ से कोई कमी नहीं रहेगी।

आप सबका बहुत धन्यवाद, बहुत – बहुत अभिवादन।